नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

भारत की रक्षा तैयारियों का नया अध्याय

ऑपरेशन सिंदूर शुरू हुए गुरुवार को एक वर्ष हो जाएगा. इस सफल सैन्य ऑपरेशन के अनुभव से सबक लेते हुए सरकार ने रक्षा तैयारियों का नया अध्याय प्रारंभ किया है.दरअसल,

भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति आज एक निर्णायक मोड़ पर खड़ी है, जहां पारंपरिक सैन्य ताकत के साथ-साथ तकनीकी श्रेष्ठता और बहु-आयामी युद्ध क्षमता को प्राथमिकता दी जा रही है. हालिया घटनाक्रम और 'ऑपरेशन सिंदूर' ने यह स्पष्ट कर दिया है कि आने वाले युद्ध केवल सीमाओं पर नहीं, बल्कि आसमान, अंतरिक्ष और साइबर स्पेस में भी लड़े जाएंगे. ऐसे में भारत की रक्षा तैयारियों में हो रहा विस्तार एक रणनीतिक आवश्यकता के रूप में उभर रहा है.एस-400 एयर डिफेंस सिस्टम की संख्या बढ़ाने की तैयारी इसी सोच का हिस्सा है. यह केवल एक मिसाइल सिस्टम नहीं, बल्कि एक 'एरिया डिनायल' और 'एयर डोमिनेंस' की अवधारणा को साकार करने वाला प्लेटफॉर्म है. 400 किलोमीटर तक की मारक क्षमता और बैलिस्टिक मिसाइलों को हवा में ही नष्ट करने की इसकी क्षमता भारत को एक मजबूत सुरक्षा कवच प्रदान करती है. यदि सरकार 5 नए स्क्वॉड्रन जोड़ती है, तो यह न केवल भारत के रणनीतिक ठिकानों को सुरक्षित करेगा, बल्कि दुश्मन के हौसले को भी शुरुआती स्तर पर ही तोड़ने का काम करेगा.

हालांकि, केवल हथियारों की संख्या बढ़ाना पर्याप्त नहीं है. 'ऑपरेशन सिंदूर' ने यह भी दिखाया कि आधुनिक युद्ध में ड्रोन और स्वार्म टेक्नोलॉजी कितनी बड़ी चुनौती बन चुकी है. पाकिस्तान द्वारा एक ही रात में सैकड़ों ड्रोन्स का इस्तेमाल इस बात का संकेत है कि सस्ते लेकिन प्रभावी हथियार भविष्य के युद्ध की दिशा तय करेंगे. ऐसे में भारत का एंटी-ड्रोन सिस्टम, इलेक्ट्रॉनिक वॉरफेयर और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित निगरानी तंत्र को मजबूत करना अनिवार्य हो गया है. इसी कड़ी में तीनों सेनाओं के लिए 'जॉइंट ऑपरेशंस कंट्रोल सेंटर' की स्थापना एक ऐतिहासिक कदम माना जा सकता है. लंबे समय से यह महसूस किया जा रहा था कि थल, जल और वायु सेना के बीच बेहतर समन्वय के बिना आधुनिक युद्ध में निर्णायक बढ़त हासिल करना मुश्किल है. एकीकृत कमांड और कंट्रोल सिस्टम न केवल त्वरित निर्णय लेने में मदद करेगा, बल्कि संसाधनों के बेहतर उपयोग को भी सुनिश्चित करेगा. भविष्य में भूमिगत कमांड सेंटर की योजना इस दिशा में भारत की गंभीरता को और भी स्पष्ट करती है.

लेकिन सबसे बड़ा अंतर जिस क्षेत्र में दिखाई देता है, वह है अंतरिक्ष आधारित निगरानी. चीन के पास हजारों सैटेलाइट्स और उनमें सैकड़ों सर्विलांस के लिए समर्पित हैं, जबकि भारत अभी इस क्षेत्र में पीछे है. यह अंतर केवल आंकड़ों का नहीं, बल्कि सामरिक बढ़त का है. युद्ध के दौरान रियल-टाइम इंटेलिजेंस और निगरानी ही सफलता की कुंजी होती है. ऐसे में 52 नए उपग्रहों का प्रस्तावित नेटवर्क भारत के लिए 'गेम चेंजर' साबित हो सकता है.

स्पष्ट है कि भारत अब केवल रक्षात्मक रणनीति तक सीमित नहीं रहना चाहता, बल्कि एक सक्रिय और बहु-स्तरीय सुरक्षा ढांचा विकसित कर रहा है. हालांकि, इस पूरी प्रक्रिया में आत्मनिर्भरता, तकनीकी नवाचार और समयबद्ध क्रियान्वयन सबसे महत्वपूर्ण होंगे. रक्षा तैयारियों का यह विस्तार केवल शक्ति प्रदर्शन नहीं, बल्कि एक स्थिर और सुरक्षित भारत की दिशा में आवश्यक निवेश है. जाहिर है केंद्र सरकार बाहरी सुरक्षा के मामले में किसी प्रकार का जोखिम लेने के पक्ष में नहीं है.

ऑपरेशन सिंदूर बल प्रयोग का एक उत्कृष्ट उदाहरण

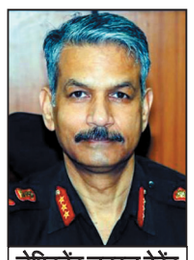
लेफ्टिनेंट जनरल देवेंद्र प्रताप पांडे (सेवानिवृत्त)

> भारत का दृष्टिकोण युद्ध में तनाव को नियंत्रित रखने के महत्व को रेखांकित करता है, क्योंकि आधुनिक युद्ध केवल बल प्रयोग तक ही सीमित नहीं होते हैं. बल्कि इसमें शत्रु और अंतरराष्ट्रीय समुदाय, दोनों की धारणाओं को नियंत्रित करना भी शामिल होता है. अपनी प्रतिक्रिया को संतुलित रखकर, भारत ने कोई जल्दबाजी दिखाए बिना दृढ़ संकल्प का प्रदर्शन किया. इससे यही संकेत मिला है कि भारत निर्णायक कार्रवाई करने को जितना तैयार है, उतना ही वह अनियंत्रित संघर्षों को रोकने के लिए भी प्रतिबद्ध है.

बदलते राजनैतिक-सैन्य लक्ष्यों के बीच युद्ध लड़ने के अमेरिका, इजराइल और रूस के प्रयोगों ने यह दर्शाया है कि 21वीं सदी के युद्ध और संघर्ष अक्सर लंबे एवं अस्पष्ट अभियानों में बदल कर रह गए हैं. इनके नतीजे संबंधित क्षेत्र के लिए विनाशकारी बन गए हैं और अखिरकार पहल करने वाले को ही इनका फायदा नहीं मिल पाया है. तालिबान, इराक, यूक्रेन, गाजा और अब ईरान का संघर्ष यह बतलाता है कि सैन्य कार्रवाई का उद्देश्य अनिश्चित काल तक दबाव बनाए रखना नहीं होता है. इसका उद्देश्य निर्णायक रणनीतिक नतीजे हासिल करना और फिर ज्यादा ताकतवर सैन्य शक्ति द्वारा तय की गई अनुकूल शर्तों पर पीछे हट जाना होता है.

ऑपरेशन सिंदूर के जरिए भारत द्वारा व्यक्त की गई प्रतिक्रिया ने दुनिया की सैन्य शक्तियों, खासकर संयुक्त राज्य अमेरिका के सामने अपनाए जाने लायक एक ठोस विकल्प पेश किया है. संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति ने अनगिनत बार युद्धविराम का झूठा श्रेय लिया है. लेकिन वही राष्ट्रपति ईरान को सैन्य एवं आर्थिक रूप से तबाह कर देने के बावजूद युद्धविराम का लक्ष्य हासिल नहीं कर पाए हैं. ऑपरेशन सिंदूर सुनियोजित बल प्रयोग का एक ऐसा उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसमें उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया और उन उद्देश्यों को हासिल कर लेने के बाद अनुशासित संयम भी बरता गया.

ऑपरेशन सिंदूर पाकिस्तान के स्थापित सुरक्षा प्रतिष्ठान द्वारा की गई उकसावे की एक क्रूर हरकत के बाद शुरू किया गया था. इस हरकत के तहत दिए गए निर्देशों अनुसार काम करने वाले आतंकवादियों ने धर्म के आधार पर केवल पुरुषों की उनके परिवार के सदस्यों, पत्नियों, बच्चों और माता-पिता के सामने बेरहमी से हत्याएं कीं. इस घटना के बाद न तो भावावेश में आकर तनाव बढ़ाया गया और न ही अंधाधुंध प्रतिशोध लिया गया. बल्कि एक सुनियोजित तरीके से जवाब दिया गया. हर कदम सोच-समझकर, लेकिन तेजी से उठाया गया. ये कदम दंडात्मक और विध्वंसात्मक, दोनों ही थे. इन कदमों को अलग-अलग ठिकानों को तबाह करने के उद्देश्य से तैयार किया गया था. यह क्षमता और इरादे, दोनों का संकेत था. फिर भी, तनाव घटाने के लिए भी एक अलग से गुंजाइश रखी गई थी. यह किसी कमजोरी का नहीं, बल्कि नियंत्रण का सबूत था. यह भावना नहीं, बल्कि वह निष्ठुरता थी जो न्यायसंगत युद्ध के अधिकार और क्षमताओं में विश्वास एवं भरोसे की वजह से आती है.

भारत की रणनीति की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता राजनैतिक-सैन्य उद्देश्यों को लेकर स्पष्टता थी. इसका लक्ष्य सीमा-पार आतंकवाद के लिए जिम्मेदार बुनियादी ढांचे एवं तत्वों पर तत्काल और ठोस प्रहार करना तथा प्रतिरोध को फिर से स्थापित करना था. यह सब परमाणु सुरक्षा कवच और अंतरराष्ट्रीय कानूनों के दायरे में रहते हुए किया गया. अहम परिसंपत्तियों को तेजी से नष्ट करके और पाकिस्तान के सैन्य नेतृत्व को मनोवैज्ञानिक आघात पहुंचाकर इन लक्ष्यों को हासिल करने के बाद, भारत ने संघर्ष को रोक दिया. कुल 88 घंटों के भीतर, भारतीय सशस्त्र बलों ने इस मिशन के उद्देश्यों को पूरा करके राजनीतिक प्रतिष्ठान को सौंप दिया. राजनीतिक प्रतिष्ठान ने सशस्त्र बलों को साफ और सुस्पष्ट निर्देश दिए थे. पाकिस्तानी सैन्य प्रतिष्ठान ने युद्धविराम की गुहार लगाई. उन्हें यह गलतफहमी थी कि वे कोई नतीजा भुगते बिना उकसावे की हरकत बेलगाम जारी रख सकते हैं. लेकिन उन्हें घुटने टेककर कदमों में गिरना पड़ा। उनके राजनेता लाइव मीडिया के सामने डरे हुए दिखाई दिए और सैन्य कमांडर छिप गए. यह बेहद नाजुक क्षण था. इसने एक संरचनात्मक हकीकत को उजागर किया. भले ही पाकिस्तान की रणनीति लंबे समय से 'हजारों घावों से लथपथ करके भारत को धीरे-धीरे कमजोर करने' की नीति पर केन्द्रित रही है, लेकिन उसमें सीधे उसकी सत्ता के मूल केन्द्रों को निशाना बनाने वाले संक्षिप्त, तेज और उच्च तीव्रता वाले हमलों का सामना करने की क्षमता नहीं है. भारत के प्रति उसकी निरंतर शत्रुता केवल वैचारिक ही नहीं, बल्कि संस्थागत भी है. पाकिस्तान की सेना का राज्य पर प्रभुत्व संघर्ष की इसी रणनीति पर टिका हुआ है.

भारत का रणनीतिक समुदाय यह अच्छी तरह समझता है कि पाकिस्तान से उसकी रणनीतिक दिशा में मौलिक बदलाव की अपेक्षा करना अव्यावहारिक है, क्योंकि शत्रुता आकस्मिक नहीं बल्कि अस्तित्वगत है. इसलिए भारतीय प्रतिक्रिया ने पाकिस्तान के मसले को 'हल' करने का प्रयास ही नहीं किया, बल्कि तत्काल दंड लगाकर और अंतहीन तनाव के चक्र में फंसे बिना प्रतिरोध को बहाल किया.

ग्वालियर चंबल डायरी

उपचुनावों की आहट से पहले चंबल में बदल गया पूरा महकमा

हरीश दुबे

ऐसे वक्त जब विधानसभा चुनाव में ढाई बरस और स्थानीय निकाय चुनाव में बमुश्किल सवा साल का वक्त बाकी है, समूचे ग्वालियर चंबल संभाग में पुलिस महकमे में शीर्ष स्तर पर नई जमावट की गई है, हालांकि फेरबदल के इस दौर में ग्वालियर के पुलिस कप्तान धर्मवीर सिंह अपनी कुर्सी साफ बचा ले गए, ग्वालियर में उन्हें दो बरस से ज्यादा का वक्त हो चुका है. स्थानांतरण किसी भी महकमे में एक विभागीय प्रक्रिया है और इसे भविष्य के चुनावों या किसी राजनीतिक प्रयोजन से जोड़कर देखा जाना जल्दबाजी होगी लेकिन यह भी सच्चाई है कि वरिष्ठ प्रशासनिक पदों पर पदस्थापना में सत्ताधारी दल के स्थानीय छत्रपों की पसंद और नापसंद का भी अहम रोल रहता ही है, मंत्रालय में तबादला सूचियां फाइनल करते वक्त संबंधित जिले के राजनीतिक समीकरण को खास तौर पर ध्यान में रखा जाता है.

ग्वालियर चंबल की दो विधानसभा सीटों दतिया और विजयपुर में विधानसभा उपचुनाव का मसला कोर्ट के भावी निर्णय पर निर्भर है लेकिन सत्तारूढ़ दल अपनी ओर से हरसंभव मुस्तैदी बनाए रखना चाहता है, दतिया में एसपी बदले जाने को इसी संदर्भ में देखा जा रहा है. दतिया में अब तक सूरज वर्मा कप्तानी संभाल रहे थे, उन्हें भिंड भेज दिया गया है और उनकी जगह मयूर खंडेलवाल को लाया गया है. प्रदेश सरकार ने ताजा फेहरिस्त में जिन 62 आईपीएस अधिकारियों की पोस्टिंग में बड़ा फेरबदल किया है, उसमें ग्वालियर-चंबल संभाग ही सबसे ज्यादा प्रभावित हुआ है. संभाग के कई एसपी और प्रशासनिक अधिकारी बदल दिए गए हैं. लंबे समय से ग्वालियर रेंज में डीआईजी की जिम्मेदारी संभाल रहे अमित सांघी को होमगार्ड में भेजकर उनकी जगह असित यादव को ग्वालियर रेंज का नया डीआईजी बनाया गया है. खास बात यह कि 2011 बैच के आइपीएस असित यादव पिछले दो साल से भिंड में पुलिस अधीक्षक थे.

इससे पूर्व वह मुरैना के भी पुलिस कप्तान और ग्वालियर में एसएएफ कमांडेंट रह चुके हैं. खास बात यह कि पुलिस में उनका कैरियर ग्वालियर से ही शुरू हुआ था. प्रक्षिप्त अवधि में वह ग्वालियर में ही बतौर सीएसपी तैनात रहे थे. फेरबदल में मुरैना और शिवपुरी भी प्रभावित हुए हैं जहां क्रमशः धर्मराज मीना और यांगचेन डोलकर भूटिया को नई कमान सौंपी गई है. कानून व्यवस्था के लिहाज से पिछले कुछ महीने इस अंचल में सुकून से नहीं बीते हैं, जाहिर है कि नए ओहदेदारों के समक्ष चुनौतियां कम नहीं हैं

नए सदर के आते ही साडा में लौट आई रौनक, नए शहर के आबाद होने की उम्मीद

राजधानी दिल्ली में आबादी और प्रशासनिक दफ्तरों के बढ़ते दवाब को कम करने के लिए ग्वालियर महानगर के पश्चिमी छोर पर नया ग्वालियर बसाने जिन सपनों के साथ विशेष क्षेत्र विकास प्राधिकरण यानि साडा की स्थापना की गई थी, उसमें पिछले छह बरस से चल रहा सूखा अब समाप्त हो गया है. नए सदर अशोक शर्मा ने आज जिस उत्साह और नए संकल्पों के साथ प्राधिकरण की सदारत संभाली, उसे देखते हुए उम्मीद लगाई जा सकती है कि इस प्राधिकरण के दिन बहुरने वाले हैं. अशोक शर्मा अनुभवी राजनेता हैं और करीब ढाई दशक पहले ग्वालियर मेला प्राधिकरण के अध्यक्ष पद को संभालते हुए अपना प्रशासनिक हुनर दिखा चुके हैं. आर्थिक मंदी के उस दौर में जब सौ साल पुराना ग्वालियर मेला भी हिचकोले खाने लगा था, उस वक्त वे ग्वालियर के उद्योग, वाणिज्य जगत के पर्याय बन चुके इस आयोजन को पटरी पर ले आए थे. उनसे कुछ ऐसी ही उम्मीद नई जिम्मेदारी के निर्वाहन को लेकर लगाई जा रही है. दरअसल, साडा में मकान तो खूब बन गए हैं, लेकिन उनमें रिहायश नहीं हुई, केंद्र सरकार का कोई बड़ा दफ्तर भी यहां ट्रांसफर नहीं हुआ. राजीव गांधी सरकार में आवास और शहरी विकास मंत्री रहे अब्दुल गफूर ने दिल्ली का दवाब कम कम करने जिस एनसीआर का ब्लू प्रिंट तैयार किया था, उसमें ग्वालियर भी शुमार था लेकिन छियासी में उनके मंत्री पद से हटते ही एनसीआर के प्रस्तावित मानचित्र से ग्वालियर भी गायब हो गया. स्व. शीतला सहाय ने ग्वालियर के समीप बसाए जा रहे काउंटर मैग्नेट नगर को अपना विजन बनाया लेकिन सरकारें बदलते रहने से जीतोड़ कोशिश के बाद भी वे लक्ष्य तक नहीं पहुंच सके. बाद के दौर में जयसिंह कुशवाहा और राकेश जादौन जैसे नेताओं को भी साडा संभालने का मौका मिला, उन्होंने दिल्ली से भोपाल तक प्रयास भी किए लेकिन वे साडा को हाशिए पर जाने से नहीं रोक सके. अब साडा में नया निजाम है. चूंकि ग्वालियर के तीन प्राधिकरणों में से सिर्फ साडा की अध्यक्षी ही सिंधिया खेमे को मिली है, लिहाजा माना जा सकता है कि नए सदर अपने नेता के प्रभाव के इस्तेमाल कर काउंटर मैग्नेट सिटी की बसाहट में आ रही व्यावहारिक अड़चनों को दूर करने एवं नए शहर से जुड़ी अपनी परिकल्पनाओं और संकल्पों को जमीन पर साकार करने के लिए ठोस कदम उठाएंगे.

अब ममता की दशा व दिशा क्या होगी?

15 वर्ष तक राज्य का नेतृत्व करने के बाद ममता बनर्जी सत्ता से बाहर हो गई हैं. क्या इस स्थिति में वह अवसाद में चली जाएंगी या घायल शेरनी के समान खूंखार बन जाएंगी? पराजय स्वीकार करने से इनकार करते हुए उन्होंने कहा कि वह मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देने लोकभवन नहीं जाएंगी. टीएमसी की पराजय के बाद उन पर विपक्ष के नेता की जिम्मेदारी आएगी और इस भूमिका में वह बीजेपी के मुख्यमंत्री के प्रति बेहद तीखा रुख अपना सकती हैं. अपने आंदोलकारी रवैये से ज्योति बसु जैसे दिग्गज नेता को परेशान करने वाली ममता के सामने सुवेंदु आधिकारी कितना टिक पाएंगे. वजह यह है कि 'दीदी' सदन से लेकर सड़क तक संघर्ष करने का स्वभाव, अनुभव और क्षमता रखती हैं. वह बोलती भी हैं तो ऐसा लगता है मानो लड़ रही हैं. उनके इस तरह के स्वभाव का अनुभव बंगाल के राज्यपाल रह चुके जगदीप धनखड़ को हुआ था. ममता को मालूम है कि उन्हें बीजेपी ने किस तरीके से हराया. वैसे भी युद्ध और चुनाव में सब कुछ जायज माना जाता है. साम, दाम, दंड, भेद सभी आजमाए जाते हैं. सुवेंदु अधिकारी की भूमिका पहले ही घर के भेदी की थी. उन्हें अपने साथ लेकर बीजेपी ने बंगाल में पैठ जमाई. चुनाव के पहले एसआईआर लागू कर ऐसे लाखों वोटों का सफाया कर दिया गया, जो टीएमसी के पक्ष में जाते थे. ईडी, सीबीआई और आयकर विभाग जैसी केंद्रीय एजेंसियों को सक्रिय किया गया. मुक्त व निष्पक्ष वातावरण में चुनाव कराने की जिम्मेदारी निर्वाचन आयोग की रहती है लेकिन विपक्ष का आरोप यही रहा कि चुनाव आयोग बीजेपी की मदद कर रहा था. पिछले 2 वर्षों में ममता सरकार के प्रति नाराजगी बढ़ी. कोलकाता में आरजी कर अस्पताल की महिला डॉक्टर से दुष्कर्म व हत्या प्रकरण से सरकार की बदनामी हुई. इस महिला डॉक्टर की मां को बीजेपी ने उम्मीदवारी दी. बीजेपी ने महिला सुरक्षा का मुद्दा प्रभावशाली ढंग से उठाया और भयरहित शासन देने का वादा किया. देखना होगा कि क्या विपक्षी एकता को मजबूत बनाने में ममता कुछ योगदान देंगी? अपने राज्य में हार के बाद दिल्ली तक लड़ने का उनका हौसला क्या टिक पाएगा?

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

गंगोत्री से गंगासागर तक भाजपा ने खिलाया कमल

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, हमें आश्चर्य हो रहा है कि गंगोत्री से गंगासागर तक कमल खिल गए हैं. उत्तराखंड, उत्तरप्रदेश, बिहार और अब बंगाल में भी यही नजारा है. हर राज्य को बीजेपी का सहारा है. हमें लगता है कि मोदी के करकमलों का कमाल सारे देश में देखा जा रहा है. बीजेपी माने जीत की गारंटी!'

हमने कहा, 'निश्चित रूप से कमल हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति से जुड़ा है. लक्ष्मी को कमला और भगवान विष्णु को कमलापति कहा जाता है. उनके 4 हाथों में शंख, चक्र, गदा और पद्म (कमल) है. धन की देवी लक्ष्मी भी कमल के आसन पर विराजती हैं. विष्णु की नाभि से निकले कमल पर ब्रम्हा विराजमान हैं जिन्होंने सृष्टि की रचना की. भगवान राम को कमलनयन कहा जाता है. जब शिवजी की पूजा में एक कमल का फूल कम पड़ गया था, तो राम अपना नेत्र अर्पित करने जा रहे थे तभी शिव ने उन्हें ऐसा करने से रोक दिया और रावण पर विजय पाने का आशीर्वाद दिया.'

पड़ोसी ने कहा, 'कमल में विशेषता है कि जब कोई भौंरा

उसके रूप पर मुग्ध होकर कमल पर बैठ जाता है तो पंखुड़ियां बंद होने पर वह वहीं कैद होकर दम तोड़ देता है. देखिए बीजेपी का कमल खिला तो 3 टर्म पुरानी ममता की टीएमसी ने दम तोड़ दिया.'

हमने कहा, 'कमल की महिमा अपरंपार है. बीजेपी का अमोघ शस्त्र 'ऑपरेशन लोटस' है जिससे वह विपक्षी पार्टियों का विभाजन करवा देती है. राष्ट्रवादी कांग्रेस और शिवसेना को निशाना बनाने के लिए इसी का इस्तेमाल किया गया था. झाड़ वाले केजरीवाल के 7 महारथी राज्यसभा सदस्य भी कमल की ओर खिंचे चले आए. बंगाल में तृणमूल कांग्रेस के तिनके बिखर गए और जबरदस्त परिवर्तन हो गया. असम और बंगाल में बीजेपी की सत्ता का मतलब घुसपैठियों की शामत आना है. चुनाव आयोग के एसआईआर रूपी मिसाइल ने उन वोटों का पहले ही सफाया कर दिया था, जो टीएमसी को मिलने वाले थे. अब बंगालवासी कमल को देखकर कह सकेंगे तुम मिले दिल खिले, अब जीने को क्या चाहिए!'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12250 - डॉ. सागर खादीवाला

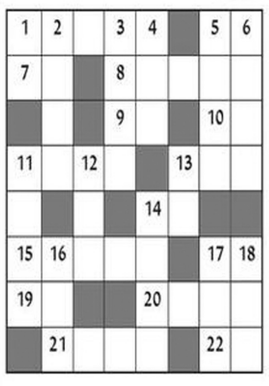

ऊपर से नीचे

1. स्थिति, अवस्था, हालत 2. जिसके पास लाखों रुपयों की संपत्ति हो 3. विजयादशमी 4. हिलोर, तरंग 5. नया-नया आया हुआ (सं.) 6. स्पष्टवादी, किसी तरह का संकोच न करने वाला, उग्र 11. दाएं तथा बाएं दोनों हाथों से सुगमतापूर्वक तीर चला सकने के कारण ही अर्जुन का यह नाम पड़ा 12. वर्षा के चार महीने, चातुर्मास, वर्ष ऋतु संबंधी गीत या कविता 13. भूलने का भाव, गलती, चूक 14. मन संबंधी, मन की कल्पना से उत्पन्न 16. पान में खाने का तंबाकू, सुरती, चावल से बना मीठा भोज्य पदार्थ 17. सम्मान, प्रतिष्ठा 18. हिंदुस्तान

बाएं से दाएं

1.दल परिवर्तन करना 5. नाखून 7. डाली, पौधे की कलम, टहनी (उर्दू) 8. कुशल घुड़सवार 9. प्रत्येक, एक-एक, छीनने या हरण करने वाला, शिव 10. बीता हुआ, दशा, अवस्था 11. किसी स्त्री के सती होने के स्थान पर स्मारक स्वरूप बनाया गया छोटा चबूतरा या वेदी 13. पृथ्वी का ऊपरी तल या भाग, धरातल 14. सामग्री, सामान, धन, संपत्ति, कोई उत्तम वस्तु, माला 15. उपकरण, सामग्री 17. चमक, कांति, दीप्ति 19. वस्त्र, चीरने का काम या भाव 20. एक प्रख्यात विजेता जो मकदूनिया नरेश का पुत्र था 21. दर्शनशास्त्र का ज्ञाता 22. न, नहीं, सम्मति, राय, वोट

Solution 12249

स	म	■	आ	स	रा	■	प
ह	त्या	■	या	द	■	आ	रा
च	■	आ	■	न	व	यु	ग
र	क्षा	त्म	क	■	र	क्त	■
■	ल	जा	ना	■	मा	■	अ
मी	न	■	ग	म	ला	■	र
ना	■	अं	त	र	■	त	मा
र	ज	त	■	ना	श	वा	न

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में व्यवसाय में लाभ होगा, पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा, यात्रा का योग है, वर्ष के मध्य में नारी पक्ष से सहयोग मिलेगा, आर्थिक लाभ होगा, किसी विशेष कार्य से लाभांवित होने का अवसर प्राप्त होगा, वर्ष के अन्त में सिर दर्द अनिद्रा जैसे रोगों से कष्ट हो सकता है, जल्दबाजी में वाहन न चलायें, तनाव रहेगा, घरेलू कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को लाभांवित होने का योग है, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को घरेलू कार्यों में नारी पक्ष से आर्थिक संकट हो सकता है, कर्क राशि के व्यक्तियोंको व्यस्तता रहेगी, सिंह राशि के व्यक्तियों को सिर दर्द अनिद्रा जैसे रोगों से कष्ट हो सकता है, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को यात्रा का योग है, मकर और कुंभराशि के व्यक्तियों को रूकावटों के बाद सफलता मिलेगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को कार्य में व्यस्तता रहेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक हंसमुख मिलनसार, होगा, खेलों के प्रति विशेष ध्यान देगा, स्वास्थ्य साधारण अच्छा रहेगा, बचपन में आकस्मिक स्वास्थ्य कष्ट होगा, बाद में अच्छा रहेगा,विद्या में रूचि रहेगी, अपने संबंधों को मधुर रखेगा, जन्म स्थान से दूर रहकर उन्नति करेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

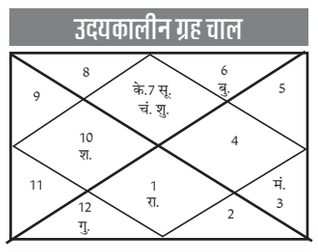

पंचांग

रा.मि. 17 संवत् 2083 शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पंचमीं गुरूवासरे प्रातः 6/52, पूर्वाषाढ़ नक्षत्रे दिन 3/47, साध्य योगे रात 11/16, तैतिल करणे सू.उ. 5/28, सू.अ. 6/32, चन्द्रचार धनु रात 10/17 से मकर, शु.रा. 9, 11, 12, 3, 5, 7 अ.रा. 10, 1, 2, 4, 6, 8 शुभांक- 2, 4, 8.

व्यापार भविष्य

शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पंचमीं को पूर्वाषाढ़ नक्षत्र के प्रभाव से समस्त प्रकार के अनाजों, जौ, ज्वार, मक्का, बाजरा आदि के भावों में जोरदार तेजी होगी, तिल, सरसों, के भाव में समानता रहेगी. भाग्यांक 1476 है.

मेष- टालमटोल के चलते कामकाज में परेशानी होगी, बुजुर्गों का दिशा निर्देश लाभकारी रहेगा, कीर्ति बढ़ेगी, अचानक बड़ी जिम्मेदारी आ सकती है.

वृषभ- मांगलिक खर्च होगा, कार्यक्षेत्र में आपसी तनाव व मनमुटाव से मानसिक परेशानी हो सकती है, जल्दबाजी में लिया गया निर्णय सफल होगा.

मिथुन- निजी कार्यों को टालने से समस्या बढ़ेगी, मामूली बात पर आपसी कहासुनी बढ़ सकती है, शांति से काम निकालना लाभदायक रहेगा, लाभ कम होगा.

कर्क- किसी कामना की पूर्ति होगी, यात्रा में लाभ होगा, किया गया प्रयास सफल होगा, नवीन योजना बनेगी. आर्थिक कार्यों में यश प्राप्त होगा, साहस रखें.

सिंह- कैरियर में सफलता के लिये थोड़ा इन्तजार करें, कोई बड़ी जिम्मेदारी निभाना पड़ेगी, महत्वाकांक्षा की पूर्ति होगी, दूर की यात्रा होगी.

कन्या- घरेलू आयोजन में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेंगे, बिखरे कार्य समेटने में परिवार का सहयोग रहेगा, आजीविका के प्रयासों में सफलता मिलेगी.

तुला- कानूनी मामले आपसी बातचीत से सुलझ सकते हैं, शासकीय कार्यों में सफलता मिलेगी, योजनाओं का विकास होगा, स्त्री जाति का सहयोग मिलेगा.

वृश्चिक- कर्जदारी से छुटकारा मिलेगा, जीवनसाथी की सलाह से हिम्मत बढेगी, दूर की यात्रा सावधानी से करें, उलझनों से छुटकारा मिलेगा.

धनु- नजदीकी कार्यों के कारण भागदौड़ बढ़ सकती है, आप जोखिम उड़ाने के लिये तैयार रहेंगे, मान सम्मान, प्रतिष्ठा बढ़ेगी, विरोधी वर्ग सक्रिय रहेगा.

मकर- आप जो चाहते हैं, वैसा हो पाना मुश्किल है, विरोधी प्रबल होंगे, पारिवारिक वातावरण आनन्दमय बना रहेगा, रोगी के स्वास्थ्य में सुधार होगा.

कुम्भ- कामकाज के सिलसिले में यात्रा हो सकती है, वैभव के सामान पर धन खर्च होगा, जोखिम के कार्यों में सतर्कता बांछनीय, लाभ अच्छा होगा.

मीन- मित्रों के साथ मौज मस्ती में समय बीतेगा, पारिवारिक निकटता बढ़ेगी, सुखद समाचारों की प्राप्ति होगी, आकस्मिक दूर की यात्रा हो सकती है.

SUDOKU 7382

	7	9	4	2		6		3
	6		8		7		2	
4	1				3	5	8	
	9	8	3					
7		4		5		8		1
					9	7	3	
	8	5	7				4	6
	2		9		1		5	
3		1		6	8	9	7	

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7381

8	9	5	1	3	7	2	4	6
7	3	2	6	5	4	1	8	9
1	6	4	8	9	2	7	5	3
5	7	3	4	2	9	6	1	8
4	2	8	5	6	1	3	9	7
6	1	9	3	7	8	5	2	4
3	5	1	9	4	6	8	7	2
2	4	6	7	8	5	9	3	1
9	8	7	2	1	3	4	6	5